



DR. PARSHURAM KOMAJI KHUNE

Dr. Parshuram Komaji Khune is known for his outstanding work for the Adivasi and naxal area. He is working as Natyakalavant (Drama Actor) for 50 years in Zadipatti Rangabhumi in 800 folk arts and dramas and performed in around 5000 various roles.

2. Born on 22nd February, 1952 in small village Gurnoli situated in complete adivasi area and huge forest area of Maharashtra State, Dr. Khune completed his primary education from Z.P. School, Gurnoli and later completed his secondary and higher education from Nawargaon, District Chandrapur. He completed Diploma in Homeopathic Medicine and Surgery (D.H.M.S.) from Nagpur.

3. Dr. Khune worked as an active sarpanch at Gurnoli Gram Panchyat for 10 years. He worked to overcome superstitions, old customs and traditions from the Adivasis and uneducated people from naxal backward district who had become the victim of it. The impact of his life and his role is unique. Everyone who ever came in his contact in the form of dramas got impressed with his skill. Many youngsters took inspiration from his work and could stand on their own feet. He also works for old artists for their pension. He became their role model of East Vidharbhiyans and Adivasis.

4. Dr. Khune is known as 'Dada Kondake of Vidarbha'. He received Shetinishta Puraskar in 1991 by the Government of Maharashtra for his various inventions in the field of agriculture. In 1992, he received Sunil Bhawasar Puraskaar for Juggler's show. In 1993, he was honoured by Kala Gaurav Puraskar. In 1994, he was awarded by the District Administration for participating in Akhil Bhartiya Nehru Yuwa Kendra, Madras. In 1996, he was awarded with Smita Patil Smruti Puraskar for Manav Mandir, Nagpur. In 2012, he was rewarded by Kala Dan Puraskar by the Government of Maharashtra for his contribution in the field of drama art.



डॉ. परशुराम कोमाजी खुणे

डॉ. परशुराम कोमाजी खुणे आदिवासी और नक्सल क्षेत्रों में अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए जाने जाते हैं। वह 50 वर्षों से जडिपट्टी रंगभूमि में नाट्य कलावंत (नाटक अभिनेता) के रूप में काम कर रहे हैं और उन्होंने 800 लोक कलाओं और नाटकों में लगभग 5000 विभिन्न भूमिकाएं निभायी हैं।

2. 22 फरवरी, 1952 को महाराष्ट्र राज्य के नितान्त आदिवासी क्षेत्र और विशाल वन क्षेत्र स्थित छोटे से गांव गुरनोली में जन्मे, डॉ. खुणे ने अपनी प्राथमिक शिक्षा जेड.पी. स्कूल, गुरनोली से की और बाद में अपनी माध्यमिक और उच्च शिक्षा नवरगांव, जिला चंद्रपुर से पूरी की। उन्होंने नागपुर से डिप्लोमा इन होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी (डी. एच.एम.एस.) किया।

3. डॉ. खुणे ने 10 वर्ष तक गुरनोली ग्राम पंचायत में सरपंच के रूप में सक्रिय कार्य किया। उन्होंने नक्सल प्रभावित पिछड़े जिले में आदिवासियों और अशिक्षित लोगों के बीच व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादी प्रथाओं और परंपराओं को दूर करने का काम किया। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव और उनकी भूमिका अद्वितीय है। नाटक के माध्यम से जो भी उनके सम्पर्क में आया, वह उनकी प्रतिभा का कायल हो गया। कई युवाओं ने उनके काम से प्रेरणा ली और आत्मनिर्भर हुए। उन्होंने पुराने कलाकारों की पेंशन के लिए भी कार्य किया है। वह पूर्वी विदर्भ के लोगों और आदिवासियों के लिए आदर्श बन गए।

4. डॉ. खुणे को 'विदर्भ का दादा कोंडके' कहा जाता है। कृषि के क्षेत्र में उनके विभिन्न आविष्कारों के लिए 1991 में महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें शेतिनिष्ठ पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 1992 में, उन्हें जंगलर्स शो के लिए सुनील भावसार पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 1993 में उन्हें कला गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1994 में, उन्हें अखिल भारतीय नेहरू युवा केंद्र, मद्रास में भाग लेने के लिए जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 1996 में, उन्हें मानव मंदिर, नागपुर द्वारा स्मिता पाटिल स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 में, उन्हें नाट्य कला के क्षेत्र में योगदान के लिए महाराष्ट्र सरकार द्वारा कला दान पुरस्कार प्रदान किया गया था।